IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षा का वैचारिक पक्ष और वास्तविकता: एक विवेचन

[1]Dr. Madhulata Vyas
[1]Associate Professor
[1]R.T.M. Nagpur University

सारांशः शिक्षा का अर्थ ज्ञानार्जन होता है। शिक्षा दो तरफा होती है जिसमे आदान प्रदान की क्रिया सम्मिलित होती है। मेरी नजर में विद्या वह है जो समय के परिवर्तन के बावजूद भी किसी न किसी रूप में अप्रत्यक्ष रूप से अपने अतीत के प्रवाह को लेकर वर्तमान से जुड़ती है और भविष्य के लिए नए स्रोत तैयार करती है। हमें पौराणिकता, प्राचीनता, एतिहासिक पृष्ठभूमि को सार्थक करते हुए वर्तमान में भी प्रासंगिकता के सूत्र पिरोती है।

शिक्षा का प्रारम्भ किसी भी विद्यार्थी को साक्षर, सभ्य नागरिक बनाने के लक्ष्य से हुआ है। जिसमें शिष्टाचार, सभ्यता, समाजिकता, और आत्मनिर्भरता निर्मित करने के गुण होते है। आज समाज शिक्षित हो चुका है पर उस समाज को क्या आज हम सभ्य समाज की श्रेणी में रख सकते है? क्या हम किसी व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक कह सकते है? उसका प्रमुख कारण यह नजर आता है कि सबसे बड़ी चीज है सभ्य आचरण और संवेदना का विकास । जिसमें एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के प्रति आस्था रखता हो, एक दूसरे के दुख सुख में जुड़ता हो, चाहे वो अमीर हो या गरीब। विपरीत परिस्थितियों में जिसे कोई अभाव हो उसमें उसका साथ देना उससे सहानभूति रखना और अपने नैतिक कर्तव्य का पालन करना, ये सोच हमें सबसे पहले एक सभ्य मनुष्य, और फिर एक अच्छे नागरिक होने की संतुष्टि प्रदान करती है ।

"प्रबुद्ध राष्ट्र जीवन की पद्धति में शिक्षा क्षेत्र का उत्तरदायित्व विद्वानों, चिंतकों और आचार्यकुलम पर रहता है। शिक्षा अपने सीमित अर्थ में जीवन के लिए तैयार मानी जा सकती है परंतु व्यापक अर्थ में वह जीवन का चरम उद्देश्य ही रहेगी इन असीमित और व्यापक अर्थों में कोई अंतर्विरोध संभव नहीं क्योंकि सीमित व्यापक अर्थ में अंतरभूत रहता है। शिक्षा में विसंगति तब उत्पन्न होती है जब शिक्षा निर्देशित तैयारी मात्र रह जाती है, क्योंकि वह परिणामहिन क्रियाशीलता है। शिक्षा का उद्देश्य भावी नागरिक के व्यक्तित्व का ऐसा विकास है जिसमें उसका स्वाभिमान राष्ट्र भावना अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की इच्छा आदि विशेषताएं विकसित हो सकें स्वतंत्र देश के लिए उपयोगी हल हो सकता है"1

जिस तरह देश काल परिवर्तन होता है उसिके अनुरूप शिक्षा में भी परिवर्तन होते रहना आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा का अर्थ सीमित नहीं है वह परिस्थिति, वातावरण और सामाजिक तथा देश के स्थितियों के आवश्यकता के अनुसार रूप लेते रहती है। शिक्षा केवल निरक्षरता ही दूर नहीं करती वह हमें कठिन समय में निर्णय लेना भी सिखाती है। इसलिए वर्तमान में जिस शिक्षा की आवशयकता है वह है जीवन के विकास के लिए मूल्य शिक्षा। "शिक्षा तो वर्तमान का वह अक्षर है जिस पर सारे परिवर्तन का पहिया घूमता है शिक्षा तो वह बिंदु है हमारे भीतर जहां रोज ही नया कुछ घटता है शिक्षा प्रयोग है शास्त्र नहीं प्रयोग भविष्यमुखी होते हैं यात्रा करते हैं अंधेरे से उजाले की ओर।"[2]

इसलिए हम यह कह सकते है की शिक्षा का मूल तत्व आन्तरिक विकास के साथ बाह्य निर्भरताओं को पूर्ण करने के परिप्रेक्ष्य में समाहित है। शिक्षा हमें स्वयं अनुशासन सिखाती है। वह हमें जिम्मेदारियों और देश के प्रति उत्तर दायित्व को संभालने का निर्देश भी देती है । यहाँ हम यह कह सकते है की शिक्षा द्वारा हम में कर्तव्य परायणता जागृत होती है । "शिक्षा का उद्देश्य संस्कृति के विकास क्रम में प्राप्त मूल्य नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक आदि विविध क्षेत्रों में विभाजित होकर भी व्यक्ति और समष्टि की दृष्टि से एक व्यापक प्रभाव उत्पन्न करते हैं"3 पृष्ठ 223

साहित्यकार रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचना 'रश्मिरथी' में गुरु शिष्य संवाद में गुरु परशुराम और कर्ण में ये बताया गया है की परशुराम कर्ण को श्राप देते है की 'तूने छल से जो विद्या प्राप्त की है वह तू युद्ध में अंतिम समय में भूल जाएगा ।' वह सबसे बड़ी शक्ति थी, ब्रह्मास्त्र चलाना जिसे उसने आश्रम में रहकर बड़ी मेहनत से, लगन से सीखा था, विद्या प्राप्त की थी। जब गुरु के सामने कर्ण बोहत रोने लगता है की 'जब मैंने अर्जुन से मुकाबला करने के लिए यह ब्रह्मास्त्र चलाना सीखा था जो मेरे जीवन का लक्ष्य था। जब विद्या काम ही नहीं आएगी तो मैं जी कर क्या करूँ।' उसे जीना भी व्यर्थ लगने लगता है । उसकी इस वेदना को देख कर वे कहतें है 'क्या तूने इस आश्रम में केवल स्वार्थ पूर्ण करने के लिए ही विद्या सीखी है इसके सिवा कुछ और नहीं सीखा यहां । तेरे पास भी अपनी शक्ति है, विचार है नयी कल्पना है। तू मन से मत हार समय पर तुझे नए विचार नयी कल्पनाएँ याद आएंगी और तू एक नयी शक्ति का अर्जन कर सकेगा। तु जीवन से नहीं हार।'

महाभारत की इस कथा से अतीत की कहानी हमें आज भी प्रेरणा देती है की हम शिक्षक के साथ कक्षा में केवल पुस्तक पढना ही नहीं सीखते बल्कि उनके व्यक्तित्व का उनके अन्य शिक्षाओं का विचारों का प्रभाव भी हम पर पढ़ता है। इसलिए हमने आज जो शिक्षा विद्यार्थियों को देनी है, जो ज्ञान देना है, वो इस प्रकार का हो जो केवल सैद्धांतिक न होकर व्यवहारिक भी हो । उनमें आकलन की शक्ति पैदा की जाये। निरीक्षण की क्रिया के प्रति सचेत किया जाये, स्वाध्याय सिखाया जाए। हमें उन्हे केवल तोता पढ़ाई नहीं करवानी है, रटवा ज्ञान नहीं देना है बल्कि उनमे स्वयं में एक कौशल्य प्राप्त करने की जिज्ञासा होनी चाहिए। क्यों? कब? कैसे? इत्यादि । शिक्षण की परिभाषा रायबर्न के अनुसार "शिक्षण एक संबंध है जो बालक को अपनी समस्त शक्तियों को विकसित करने में सहायता करता है।''4

"अच्छे शिक्षण की विशेषताएं:

1। जिसमे आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन किया जा सके

2। सृजन शक्ति का विकास तथा छात्रों की समस्याओं का समाधान करना

3। शिक्षक एवं छात्र के बीच मधुर एवं समायोजन रूप से संबंध होना चाहिए

4। उत्तम शिक्षण विद्यार्थी के लिए उत्प्रेरक का कार्य करता है

5। अच्छा शिक्षण एक निश्चित विधि पर आधारित होता है क्रम के अनुसार सुव्यवस्थित सुनियोजित होता है।"5

जीवनमूल्य आधारित शिक्षाः वैल्यू एजुकेशन

शिक्षा के द्वारा शौर्य गुण निर्माण करना यह किसी भी व्यक्ति का जीवन में सबसे महत्वपूर्ण गुण है । इस गुण की आवश्यकता आज की सामाजिक परिस्थितियों में कदम कदम पर है । शौर्य गुण में मानसिक और शारीरिक शक्ति समाहित होती है । यह शक्ति तत्क्षण बुद्धि का प्रतीक है। जब झाँसी पर 1857 की लड़ाई में रानी लक्ष्मीबाई पर यह जिम्मेदारी आ गयी की उन्हे अंग्रेजों से अपनी झाँसी की रक्षा करना है। उन्होने यह भी सोचा था की अगर वे अभी युद्ध नहीं करती है तो आगे ये अंग्रेज पूरे भारत पर अपना दबाव डालेंगे। इसलिए उन्होने तुरंत युद्ध करने का निर्णय लिया और अंग्रेजों से युद्ध किया। इस तरह से हममें भी अपने देश के प्रति भावना जागृत हो , साहस का कार्य करने के लिए प्रेरित हो ऐसे कारक तत्व निर्माण करने हेतु प्रेरक मूल्य शिक्षा देने की आवश्यकता है। "देवी झांसी की रानी" कवित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की इस कविता से विद्यार्थियों को शौर्य गाथा का एहसास होता है। देश भक्ति की भावना निर्मित होती है। इस प्रकार की कवितायें पाठयक्रम में रहने से विद्यार्थियों को मूल्य आधारित शिक्षा प्राप्त होती है।

"पथ दिखा गई

पथ सिखा गई

पथ हमको जो सीख सिखानी थी

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी"। 6

वर्तमान में शिक्षा का व्यावसायिककरण ज्यादा हो गया जिसका मूल कारण भौतिकवाद है। परिणातय आज विद्यार्थियों का दृष्टिकोण भी रोजगार प्राप्त होने तक सीमित हो गया है। समाधान, स्वविकास , आत्मनिर्भरता ज्ञानार्जन आत्मविकास के साथ उच्च संस्कार या सभ्यता अर्जित के दायरे में पूर्ण होता दिखाई नहीं दे रहा । आज पढे लिखे होने पर गौरव अनुभव नहीं करते बल्कि रोजगार न मिलने पर शिक्षा को कोसते रहते है। पुस्तकों में निहित वैचारिक अध्ययन, पठन यदि हमने पूरे मनोयोग से आत्मसात किया है तो हमें शिक्षा विषम परिस्थितियों में संभलने का आधार देती है। लेखक बेकन ने कहा है, "बुद्धिमान व्यक्ति को जितने अवसर के मिलते है उससे ज्यादा तो वह पैदा करता है।" 'बीति ताही विसार दे, आगे की सुध ले'।

इसका ज्वलंत उदाहरण है, कोरोना वाइरस संक्रमण काल के दौरान प्रवासी मजदूर की हिम्मत। इनका घर पहुँचने का दृढ़ संकल्प अनुप्रेरित करता है । 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'। मजदूर अधिक पढे लिखे भी नहीं है पर वे जिंदगी भौतिकतावाद में नहीं जीते, वे इसलिए भरी दुपहर में नंगे पैर, छाले पड़ने पर भी चलते रहे, अपने परिवार के साथ घर की ओर बढ़ते रहे । जीवन में विषम परिस्थितियों के ये उदाहरण हमें हमेशा याद दिलाएँगे, हिम्मत से काम लेना, आत्मनिर्भर रहना । हमें जीवन से भी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए, जिससे हमें आत्मसंबल प्राप्त होता है ।

इस आपातकाल के दौरान शिक्षा के दरवाजे बंद नहीं हुए। जब एक दरवाजा बंद होता है तब सौ दरवाजे खुल जाते है। आज संभवतः कक्षाओं में प्रत्यक्ष विद्यार्थियों के साथ ज्ञान का आदान प्रदान नहीं हुआ लेकिन ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था शुरू रही जिससे की कई प्रकार से आधुनिक तकनीकों के माध्यम से अध्यन प्रणाली पूर्ण की जा रही है। विद्यार्थी और गुरु के बीच संवाद सेतु बना हुआ है।

वास्तव में हमें सबसे बड़ी शिक्षा समय देता है, और ग्रहण की गयी विद्या कभी व्यर्थ नहीं होती है। हमें समय के साथ चलना है, अतीत से प्रेरित होकर भविष्य निर्माण की ओर अग्रसर होना है, कौशल्य विकसित करना है, नयी कल्पनाओं के साथ शिक्षा के नव निर्माण में भविष्य के लिए, नयी शिक्षानीति की नीव रखना है।

संदर्भः

1। "महादेवी प्रतिनिधि गद्य रचनाएं" छठवां संस्करण 2005 भारतीय ज्ञानपीठ लोधी रोड नई दिल्ली संकलन संपादन डॉक्टर रामजी पांडेय शिक्षा का उद्देश्य' पृष्ठ 226

2। शिक्षा में क्रांति, ओशो, भारतीय विद्या भवन, पृष्ठ 344

3। "महादेवी प्रतिनिधि गद्य रचनाएं" छठवां संस्करण 2005 भारतीय ज्ञानपीठ लोधी रोड नई दिल्ली संकलन संपादन डॉक्टर रामजी पांडेय शिक्षा का उद्देश्य' पृष्ठ 223

4। शिक्षा तकनीकी, लेखक डॉ सतनाम सिंह, ISBN 81-8330- 044-8 अर्जुन पब्लिशिंग हाउस अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली 110002 प्रथम संस्करण 2011 पृष्ठ 28

5। शिक्षा तकनीकी, लेखक डॉ सतनाम सिंह, ISBN 81-8330- 044-8 अर्जुन पब्लिशिंग हाउस अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली 110002 प्रथम संस्करण 2011 पृष्ठ 164

6। "ज्ञानोदय"– युवा पीढ़ी विशेषांक, मई 2007 प्रकाशक– भारतीय ज्ञानपीठ, संस्थापक रमा जैन, प्रबंध संपादक श्री साहू जैन, संपादक रविंद्र कालिया, लोधी रोड नई दिल्ली पृष्ठ 23